102

1983

₹40

जागती जोत

बरस : 49 • अंक : 1-4 • अप्रैल-जुलाई, 2021

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी री मासिक पत्रिका

ISSN : 2319-3603 डाक पंजीयन संख्या : बीकानेर/161/2019-21
समाचार पत्र पंजीयन आर एन आई संख्या : 25805/73

Rajiv@75

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

जागती जोत

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति
अकादमी, बीकानेर री मासिक पत्रिका

(यू.जी.सी. सू मान्यता प्राप्त)

बरस : 49, अंक : 1–4, अप्रैल–जुलाई, 2021

**

प्रधान संपादक
भंवर लाल मेहरा
आई.ए.एस.
अध्यक्ष एवं संभागीय आयुक्त

**

संपादक
शिवराज छंगाणी

**

प्रबंध संपादक
शरद केवलिया
सचिव
राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
बीकानेर

ISSN : 2319-3603

प्रकाशक :

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी

मुरलीधर व्यास नगर, करमीसर रोड,

बीकानेर - 334004 (राज.)

कानाबाती - 0151-2210600

e-mail : rbssabkn83@gmail.com

Website : https://artandculture.rajasthan.gov.in/rbssa

facebook : www.facebook.com/rajasthani.bhasha.77

QR CODE ई-जागती जोत सारू

मोल :

इण अंक रो : 40 रिपिया

सालीणो चंदो : 120 रिपिया

लेखकां रै विचारां सूं संपादक अर प्रकाशक री सहमति होवणी जरूरी कोनी।

जागती जोत सारू रचनावां अर सालीणो चंदो

सचिव, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी

मुरलीधर व्यास नगर, करमीसर रोड, बीकानेर रै ठिकाणै सूं भिजवाज्यो।

चंदै री रकम नगद/एमओ/डीडी सूं भिजवाज्यो।

पूठै रो चितराम :

मेघा हर्ष

मुद्रक :

मनीष प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स

व्यापारियों का मौहल्ला, बीकानेर (राज.) मो. 9414138557

प्रधान संपादक
भंवर लाल मेहरा
आई.ए.एस.
अध्यक्ष एवं संभागीय आयुक्त

अध्यक्ष री कलम सूं.....

'जागती जोत' पत्रिका रो अप्रैल-जुलाई 2021 भेळप अंक आपरै सामीं राखतां घणो आणंद आवै।

राजस्थान री संस्कृति उच्छव, मेळा अर तिंवारां री रंग-बिरंगी छिब सूं ओतप्रोत है। बरस भर मोकळा परबां अर समारोहां रे शानदार आयोजनां सूं राज्य री आखै विस्व मांय विसेस पिछाण बणी है। रळियावणो पहणावो, गीत-संगीत अर उमंग-उच्छाव रै वातावरण मांय समारोह आयोजित होवै अर उण रै जरियै प्रदेस री संस्कृति मुखर हुय जावै है।

लोक गीत आमजन रै हिवड़ै रा सुर है अर मिनख-मानवी भावनावां री संगीत सुदा अभिव्यक्ति है, कथणी है। केसरिया बालम, गोरबंद, घूमर, पणियारी, ओळूं, मूमल, सावण, कुरजां, कागा, गणगौर, ईंदुणी, बन्ना-बन्नी, चिरमी, बाबा रामदेव जी अर अणगिणत इसड़ा राजस्थानी लोक गीत है, जिका जन-मानस मांय रच्या बस्या है। राजस्थानी लोक गीतां मांय संवदेणसीळता, प्रेम, करुणा अर भाषायी लालित्य है। इण मांय लोक उच्छबां, समाज, लोक जीवण री परम सरजीव कथणी मिलै है। जन्म, तीज-तिंवार,

विवाह, पूजा आद मौकां माथै अै लोक गीत विसेस रूप सूं गायीजै। कल्पना अर भावुकता रै सागै इण मांय जथारथ रा दरसण ई होवै है। इण गीतां मांय सुख-दुख, संजोग-विजोग, सैंयोग, वीरता, हास्य, ओळमां आद रो जीवन्त बखाण जीवण जथारथ रै घणा नजीक लिजावै। संजोग-विजोग रा हिवड़ौ छुअण रा चितराम भली भांति निजर आवै।

लोक जीवण रै सगळा पहलुवां नै आपां राजस्थानी लोक गीतां मांय पावां । इण लोकगीतां मांय खेजड़ी, पीपळ, बड़, नीम, कैर आद स्थानीय वनस्पति, अलायदा-अलायदा पशु-पंखेरूवां जियां हिरण, ऊँट, कुरजां, कौआ, मोर, पपीहा, कोयल आद रा उल्लेख सागै-सागै पर्यावरण संरक्षण रो संदेस ई मिळै। इण मांय वीर रस नै घणैमान महतव दिरीजै अर इण सारू बलिदान, साहस आद गुणां री कैवणगत मिळै। तलवार री टंकार अर पायल री झंकार दोनूवां नै राजस्थानी गीतां मांय दरसाइजै। धारमिक आस्था ई है अर परम्परा रै प्रति समरपण आद ई। इण मांय स्रम री प्रतिष्ठ हुयी है। इण में लोक देवी-देवतावां री अरदासणा, गुणगान ई अद्‌भुत बखाणीजै। लोक गायकां रै मधुर कंठां सूं निसरयोड़ा अै लोक गीत सुणनवाळां नै भाव-विभोर कर दिरावै।

देश मांय कोविड-19 टीकाकरण अभियान चाल रैयो है जिको स्वास्थ्य प्रतिरक्षा री दिसा में मज़बूत कदम है। देस मांय कोरोना री तीजी लैर आवण री आशंका व्यक्त की जा रैयी है। इण सूं बचाव खातर आपांनै शत-प्रतिशत टीकाकरण, मास्क पहरणौ, दो गज री दूरी बणायी राखणै अर स्वच्छता रो पूरौ ध्यान राखण री जरूरत है।

सुभकामनावां समेत

आपरो

भंवर लाल मेहरा

ISSN : 2319-3603

संपादक
शिवराज छंगाणी

सम्पादक री बात...

ओ जंगळ-मंगळ देस म्हांनै व्हालौ लागै जी

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी री मुखपत्रिका 'जागती जोत' रो अप्रैल सूं जुलाई 21 तांई रो अंक आप रै सामीं राख मेलता घणो उमंग, उच्छाव, हरख अर कोड लखावै। राजस्थानी प्रकृति अर संस्कृति अेक दूजै सूं लूम बलूम हुयोड़ी सी लागै। अठै रा लाखीणा तीज-तिंवार, मेळा लोक देवी-देवतावां री भगती-सगती का अैनाण मांडै।

राजस्थान री धरती त्याग, तपस्या, दया, दान-धरम-अध्यात्म री पुण्य धरती है, जठै रै कण-कण में सूरवीरता समायोड़ी है। इतियास इण बात री साख भरै'क अठै जुद्धवीर, धरमवीर अर भामाशाह जिसा दानवीर सपूत जलम्या जिकां इण धरती री रिछपाळ सारू अपणै-आप ने निछरावळ करग्या। दूजा प्रदेसां सूं न्यारी निरवाळी अर निकेवळी पिछाण इण प्रदेस री लखावै। कैयो जावै है'क इण धरती रा गीत कितरा मोवणा, सोवणा अर रळियावणा लागै। जियां कवि लिखै-

ओ जंगळ-मंगळ देस म्हांनै व्हालौ लागै जी,
धोळा-धोळा धोरां माथै, ऊजळी निरमळ रेत,
चम चम चमकै च्यानणी में ज्यूं चांदी रा खेत,
खोखा म्हानै चोखा लागै खेजड़ली रा खजूर,
नींबोळी आंबोळी सिरखी रस देवै भरपूर,
म्हांनै व्हाळौ लागै जी।

ISSN : 2319-3603

इण प्रदेस मांय कैर, कूमट, पीपळ, नींम, बड़ अर सहजणा बिरछ रै सागै सरेश रा पेड़ मौसम रै मुजब सुगंधी फैलावता रैवै। अठै री प्राणवायु सबसूं बत्ती लखावै। दूर दिसावर सूं लोग-लुगायां आपरै स्वास्थ्य री रिछपाळ सारू अठै आवै अर स्वस्थ हुय'र पाछा परदेस जावै।

राजस्थान री धरती सूं प्रेम रो नमूनो देखो- बीकानेर महाराजा रायसिंह जी दिखणादे विराज रैया, उण समै उणां नै 'फोग' रौ पौधो निजर आयो, उणां कैयो-

'म्हैं परदेसी पावणा, थै हो देसी लोग
म्हांने अकबर तेड़िया, थूं केत आयो फोग'

राजस्थानी भाषा-साहित रो जूनो गद्य-पद्य सांवठौ रैयो तो आधुनिक राजस्थानी मांय सिरजणहार लगोलग सिरजणात्मक चमत्कार दरसावै। अजैताईं अुपन्यासां री गिणत कम है। लांबी कथावां री जगै लघुकथावां मुकळायत मांय लिखीज रैयी है। दूजी भाषावां रै साहित रो अनुवाद (उल्थौ) ई घणै मान सामीं आवै। रेखाचितराम, संस्मरणां, जातरा साहित रै सागै-सागै रिपोर्ताज रै रचरचाव री घणी जरूरत है। राजस्थानी मांय शोध ग्रंथ, पीएच.डी. आद रो सरावण-जोग काम-काज हुय रैयो है।

सिरजणहारां सूं सदीव अडीक रैवे क बै आप री नुंवी नकोर रचनावां 'जागती जोत' मांय भिजवाय दिरावै, जिकै सूं उणां री रचनावां रो ऊजास दूजां नै मिळतौ रैवे।

अजैताईं वैस्विक महामारी कोरोना पसरती जा रैयी है- इण सारू मूंढै माथै मास्क, दो गज री दूरी, हाथ बरोबर धोवण री जरूरत है अर भीड़-भाड़ मांय ऊभा रैवण री दरकार नीं होवै। सरकारी निरदेसां री पूरी पालणा करण री जरूरत है। आप सगळा स्वस्थ रैवो अर दूजां नै ई स्वस्थ रेवण रो मारग 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' दरसावता रैवो।

'जागती जोत' आपरी पत्रिका है- इण सारू आप लगोलग रचनावां भिजवाय दिरावौ। राजस्थानी संस्कृति री घणैमान पिछाण दिरावौ। आप री सुभकामनावां सदीव प्रेरणास्पद रैवेला। जागती जोत रो अंक आप सामीं राखीजै- भरोसो है आप अंक कबूलसो।

आपरो
शिवराज छंगाणी

ISSN : 2319-3603

विगत

अध्यक्ष री कलम सूं		3
सम्पादक री बात		5
आलेख		
राजस्थानी भाषा रै सरस गीतां रा धणी : कवि लक्ष्मणसिंह 'रसवंत'-एक याद	-नारायणसिंह पीथल	9
पाण्डुलिपियाँ रो सूचीकरण : समस्यावां अर समाधान	-डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई	14
'कालूयशोविलास' रो काव्य-वैभव	-डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी	23
युवा कविसरां री इक्कीसवैं सइकै री राजस्थानी कविता में 'घर'	-डॉ. जगदीश गिरी	26
राजस्थानी क्रिसन भगती काव्य परम्परा : अेक दीठ	-डॉ. नमामी शंकर आचार्य	33
ललित कलावां रो आपसी गुंथाव अर अन्तर्सम्बन्ध	-डॉ. कृष्णा महावर : पूजा प्रजापत	38
राजस्थानी लोक गीतां रा अछूता प्रसंग	-डॉ. नीतू परिहार	41
हिन्दी सिनेमा रे मांय आज री स्त्री	-डॉ. प्रणु शुक्ला	44
अनुसंधान री सोध विधियां अर आयाम	-कांता मीना	48
शेखावाटी प्रदेश रा भित्ति-चित्रां रो स्वरूप	-विक्रम सोनी	52
वेलि साहित्य अर क्रिसन रुक्मणी री वेली	-डॉ. दीपिका विजयवर्गीय	56
राजस्थानी री लोर्यां (शिशु-गीत)	-जयसिंह आशावत	60
पाणी जिंदगाणी है	-शिवशंकर गज्जाणी	62
रिपोर्ताज		
पढ़णनै जाय रैयो हूँ	-डॉ. मदन केवलिया	64
लघुकथा		
पाँच लघुकथावां	-छगनलाल व्यास	67
संस्मरण		
आकासवाणी रै पैलै अनुबंध रौ अचंभौ	-शंकरसिंह राजपुरोहित	70

ISSN : 2319-3603

अनुवाद (व्यंग्य)

बजार मांय क्यांताई ऊभो कबीरो! — मूळ (हिंदी)- प्रेम जनमेजय; राजस्थानी उल्थौ-कृष्णकुमार 'आशु' — 73

अनुवाद (लघुकथा)

तीन लघुकथावां — मूळ (बांग्ला)- रवीन्द्रनाथ ठाकुर; राजस्थानी उल्थौ- सावित्री चौधरी — 77

व्यंग्य

स्मार्टनैस रो चस्को — -दीनदयाल शर्मा — 79

अजगर करे नीं चाकरी — -डॉ. अजय जोशी — 85

कविता

दस कवितावां — -विजय सिंह नाहटा — 87

दो कवितावां — -रवि पुरोहित — 91

कोरोना केन्द्रित छः कवितावां — -डॉ. रमेश 'मयंक' — 93

सात कवितावां — -निशांत — 98

सात कवितावां — -डॉ. कृष्णा आचार्य — 101

दो कवितावां — -राजाराम स्वर्णकार — 104

दो कवितावां — - ऋतुप्रिया — 108

गीत

पांच गीत — -मोहन पुरी — 110

हाइकू

कोविड रा हाइकू — -डॉ. शंकर लाल स्वामी — 116

पोथी परख

समकालीन चेतना की आधुनिक कहाण्याँ-

'कफन को पजामो अर दूजी कथावां' — -सी. एल. सांखला — 118

अंतस रै सबदां नै उकेरती कवितावां — -डॉ. मीनाक्षी बोराणा — 120

टाबरां रे मनगत रा चितराम 'मन री खुसी' — -पूर्णिमा मित्रा — 123

राजस्थानी समाचार — 125

कागद मिळ्यो — 135

ISSN : 2319-3603

आलेख

राजस्थानी लोक गीतां रा अछूता प्रसंग

-डॉ. नीतू परिहार

लोकगीतां री परम्परा घणी पुराणी है। पण इण रौ चलण आज भी देखण में आवै। उतणों तो नीं जतणों 25-30 बरस पैली हो। अबै ना तो बिता संस्कार होवै ना ही बितो टैम है। आधुनिकता रै बोझ तळै सांस लेता गीत टेम बेटेम सुनण मांय आवै, वै भी उण परिवारां मांय जिणमें पुराणी धारणावां नै छाती सूं लगाय राखी है। आज तो नया जमाणा रा परिवार, उणारा टाबर-टूबर वी बातै नै जाणे ही कोनी। अर कोई कैवै तो अचरज सूं आंख्यां फाड़ देखे। अबै तो वै पुराणी बातां, वै संस्कार कहाणियां अर गीतां मांय रैग्या। ई नजरिया सूं इण गीतां रौ खासो महत्व है। आगै आण वाळे टेम में ऐ गीत पुराणां दस्तावेजां रो काम करसी। इणी सूं नयी पीढ़ियां पुराणी बातां, रीति-रिवाजां रै बारै में जाणकारी हासिल कर सकेला। इतिहास बणता लोक गीतां मांय बरसां सूं चल्या आया संस्कारां रो खजाणो भरयोड़ो है। ई कारण हूं इण गीतां रो कागजां पे उतरणो जरुरी है। नीतर काळ रे सपाटा मांय ए गीत गम जासी। इण युग में मोबाइल, टेप, सी.डी., लेपटॉप आदि इती सुविधा है कै लुप्त होता लोकगीतां अर लोक साहित्य री विधावां नै चौखी तरेऊं संवार्‌यो जा सके है। लोक साहित्य सूं प्रेम और निस्ठा राखवा वाळा विद्वानां सूं म्हारी अरज है कै वै ओ पवितर काम करै। लोक साहित्य रै वास्ते आपरी जवाबदेही निभावै।

इण आलेख में राजस्थानी भाषा मांय आज भी गाया जावण वाळा गीतां मांय कह्योड़ी बातां रै आधार पर राजस्थानी संस्कृति रा थोड़ा-घणां चित्राम उकेरवां री कोशिश करी गई है। आमतौर पै गीतां रो संबंध महिलावां सूं, उणरे जमारा में घटण वाळी घटनावां अर भावां सूं जोड़योड़ा गीत हीज सुणन में आवै। इसी बात नीं है कि आदमियां नै विषय बणावा वाळा गीत कोनी। बां गीता में- पाबूजी, हड़बू जी, रामदेव जी आद सूं जुड़्योड़ा गीत है अर वै बड़ै चाव सूं गाया भी जावै। पण ज्यादातर गीतां रो संबंध महिलावां सूं है, इसा दो गीतां री बात अठै करणी चावू हूं। महिलावां रो गहणां सूं लगाव सगळा लोग जाणै। ई गहणां प्रेम सू जुड़्या घणा गीत मिल जासी। एक तो घणो प्रसिद्ध गीत ईसर-गणगौर रो ही देख सकां। इण गीत मांय कँवारी छोरियां री भावनावां

ISSN: 2319-3603

नै बखूबी परगट करियो गयो है। ई गीत री टेक- **"खेलण दो गिणगौर, भंवर म्हानै पूजण दो गिणगौर"।** ई गीत मांय गहणां रो वर्णन भी है पण वांरी बात करवा सूं पैला इण दो पंक्तियां लिखण री हूक म्हारे मन मांय है-

ओ अ म्हारी रातरिझावण, थांनै नहीं पूजण दां गिणगौर
ओ अ म्हारी दिन बतळावण, थांनै नहीं खेलण दां गिणगौर

ओ कथन नायक रो है। आपणी नायिका नै "रात रिझावण" अर "दिन बतळावण" कैवै। इसा विशेषण तो अभिजात गीतां मांय भी सुनण में नीं आवे। अठै बात महिलावां रै गैणै-प्रेम री बात है। नायिका आपणे भंवर सू कैवे-

माथा नै मैमद ल्याव भंवर, म्हारै कांनां कुंडळ ल्याव
ओ जी म्हारी रखड़ी रतन जड़ाव
भंवर म्हांनै खेलण दौ गिणगौर
मुखड़ा नै बेसर ल्याव भंवर, म्हारै हिवड़ा में हांस घड़ाय
ओ जी म्हारै बाजूबंद में लूंब लगाय

अठै लिखियोड़ी पंक्तियां में मैमद, कुण्डल, रतनजड़ी रखड़ी, बेसर, बाजूबंद लावा री बात घणां चाव सूं कही गयी है। इती ही नहीं "बहियां नै चुड़लौ", "पगल्यां नै पायल", "इधक रंग री चूंदड़ी" लावा रौ इसरार कर्‌यौ गयौ है अर बीरा रा मुजब "साईणा सिरदार", "बादीला सिरदार", भंवर, सैयां जिसा अपणावो जतावा वाळा सम्बोधनां सूं बालम नै रिझावा री कोशिश करी गयी है। ओ सगळो गीत नायक-नायिका रै लगाव सूं रचयोड़ो है। इसो लागै जियां गैहणां अर प्रेम, सेजां रौ सिणगार खास है। ईसर-गणगौर तो कैवा रा बहाणों बण गयो है। इण गीत मांय स्त्री रे सजणे रौ स्वभाव अपणा भंवर ने रिझावा रो जोश शब्दां मांय उमड्‌यो पड्‌यो है-

म्हारा बादीला सिरदार, म्हांनै पूजण दो गिणगौर
म्हारी रात रंगीली गिणगौर, नहीं पूजण दां गिणगौर
म्हारै सेजां री सिणगार, थांनै नहीं पूजण दां गिणगौर
ओ जी म्हारी सैयां जोवै बाट
भंवर म्हांनै खेलण दो गिणगौर

इण गीत रो उलट दूजो गीत है, बिंदणी सोळा सिणगार सूं सज आई है। सासू पूछै- "बहू म्हारा गहणां पहर दिखावा", अर बहू कैवे-मधुवन रौ मोरियौ थको आंबौ आपणी खुशबू सू सगळा मधुबन नै झका-झोळ कर रहयो है, सुसरौजी गढ़ रा राजवी है, म्हारा सासूजी रतन भंडार है, अबै और किसा गहणां चावै। इतौ ही नीं वा बिन्दणी आपरै परिवार नै गहणां कैवे-

सासूजी गहणां जी गहणां कांई करौ,
गहणां म्हारा देव जेठ।
सासूजी गहणां जी म्हारो सह परिवार
सहेल्यां अ आंबौ मोरियौ।

अठै दोन्यू गीतां रो अन्तर परख्यौ जा सके। पैला गीत मांय गहणां मांगवा री बात है अर दूजा मांय गहणां परिवार रां मिनखा नै ही मान्यौ गयो है। अबै आ बात जोर देर कही जा सकै है कि महिलावां नै गहणां रौ शौक होवे पण आपरै सासरै रा लोगां रौ भी घणो आदर-प्रेम भाव रैवे। ए दो बातां देखण मांय एक-दूजे सूं उलट लागै जरूर है, पण है कोनी। दोनूं एक दूजे री पूरक है। एक और बात जो इण गीत मांय दिखाई देवै वा है परिवार प्रेम री। आज रै टेम मांय जद चारूंमेर कोरोना फैल्योड़ो है परिवार रो महत्त्व और बढ जावे। जिण घरां मांय परिवार वाळा भेळा रह रिया है वै कोराना सूं मुकाबळो डटर कर सक रिया है। जो लोग एकळा रह रिया है वै घणा तकलीफ मांय है। परिवार वाळा जो कर सकै है वो काम दूजो कोई नीं कर सकै। इन वास्ते ही बिंदणी

ISSN : 2319-3603

परिवार नै गहणां मानै।

एक और गीत म्हारौ ध्यान खास आकृष्ट करियो है। मौत रा अवसर माथै गायो जावण वाळो गीत बीकानेर री पुष्करणा जाति में खासतौर सूं गायो जावै। खास बात आ है इण गीत रै सागे महिलावां ही नीं आदमी भी आंसू रळकावै। लम्बी उमर पार कर मरवा वाळा पुरुष-स्त्रियां नै भाग्यवान समझ्यो जावै। इणारी मौत रा अवसर पर गाया जाण वाळा गीत ''हरजस'' कवीजै। दूसरी बातां सै आपणी जागै सही है पण इण गीत री रीत खास है। पैला एक प्रश्न-

कुणां जी उठावै थांरी पालकी, कुणां जी उठावै रै वीमांण

फेर दूजी पंक्ति-

बेटा जी उठावैं थारी पालकी, पोता जी उठावै रै वीमांण

ए पंक्तियां मरणवाळै रै बेटा, पोता सूं भरयोड़ा परिवार रो संकेत तो करै ही है रीति-रिवाजां रो संकेत भी करै है। ''पालकी'', ''वीमांण'', 'तुळछा री माळा' आद वै बातां है जिणरो अटूट संबंध मरण-संस्कृति सूं है। इणी गीत मांय ही मरण रा त्योहार सागै जुड़योड़ी बातां रौ भी राई-रति वर्णन है। बेटा पाळकी उठावै, पोता डंडौत करै। शव रा दाह-संस्कार रै लौरै बेटा अर पोता घरां सिधारै अर मृतक वैकुण्ठ। औ गीत यो संदेश भी देवै है कै मौत मांय जीवन रो संदेस छिपयोड़ौ है।

इसा केई गीत लोक में देख्या जा सके है-

थानै राम जी बुलावै ओ बडेरां, थै माइनै सूं बारै आव जावांला द्वारका

थै दस दिन भगवत धीरज धरौ, म्हारां कंवरां नै लेवां समझाय

थै दस दिन भगवत धीरज धरौ, म्हारी माया नै लेऊं सुळझाय

थै सुणज्यौ हो कंवरां इग्याकारी, म्हारौ पीछौ दीज्यौ सुधार

थांनै प्रभु जी बुलावै बडेरां थै माइनै सूं बारै आव

थै दस दिन भगवत धीरज धरौ, म्हारी बहुवां नै देवां समझाय

सुणौ थे बहुवां इग्याकारी, म्हारी ताळा कूंजी लेवौ नीं संभाळ,

ई लेख मांय या दरसावा री कोशिश करी गयी है कै लोकगीत मीनखजूण रा तरां-तरां रंगां सूं रंगयोड़ा है। जरूरत है तो परखण री।

-सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी-विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
मो.नं.-9413864055

• • • • •

संदर्भः-

नानूराम संस्कर्ता- राजस्थानी लोकसाहित्य, 'लोकगीत', राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, चतुर्थ संस्करण, 2020।

मधुमती

ISSN : 2321-5569
राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
वर्ष 61 अंक 7, जुलाई, 2021

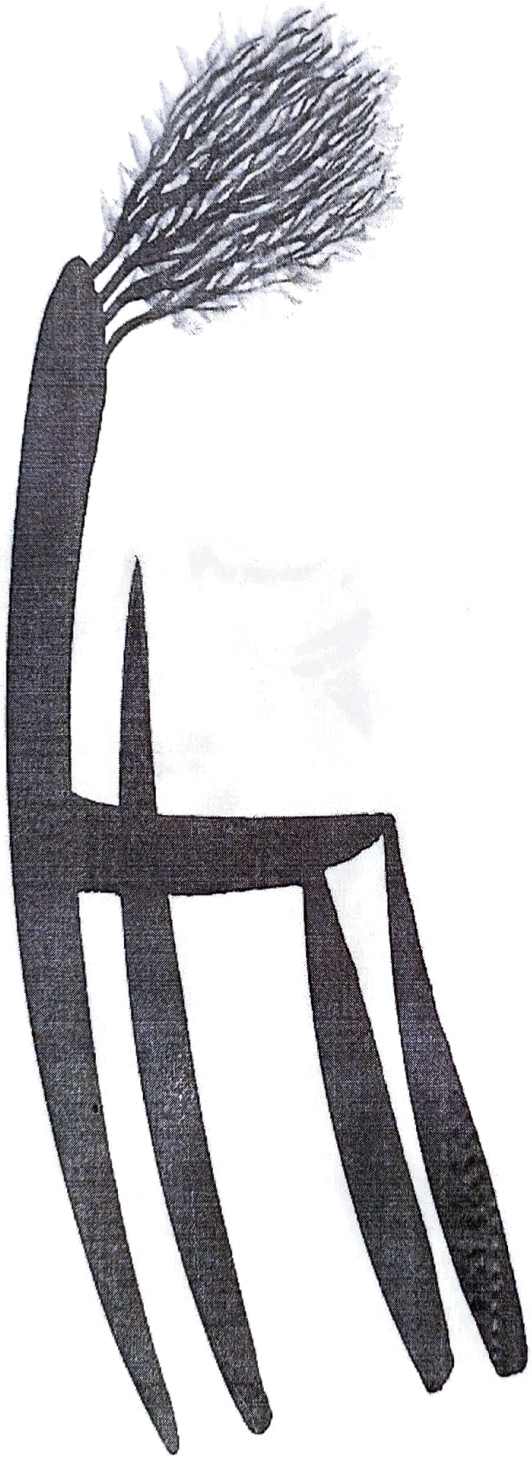

मूल्य ₹ बीस

क्रम

संपादक की बात 7

विशेष स्मरण

प्रेमचन्द : समग्र रचनात्मकता और भारतीयता 11
कमलकिशोर गोयनका

एक जिन्दा ध्वनि लोकतंत्र है यह 21
अनामिका

सैयद हैदर रज़ा 27
जयप्रकाश चौहान

लेख

लालबहादुर वर्मा होने का अर्थ 31
हितेन्द्र पटेल

हिन्दी सिनेमा और थर्ड जेंडर्स का जीवन 37
राकेश कुमार

शिवरानी के प्रेमचंद: कुछ चिन्हे कुछ अन्चिन्हे 45
नीतू परिहार

अरूण कमल के काव्य बिम्ब 51
केशव यादव

रमेशचन्द्र शाह का भारतबोध 57
कौशल्या नाई

महात्मा गाँधी और आचार्य धर्मानंद कोसंबी 62
शुभनीत कौशिक

उपन्यास अंश

सह-सा 68
गीतांजलिश्री

अनुवाद

युवा कवि अक्सर फॉर्म को लेकर
उदासीन होता है 81
मूल अंग्रेजी : कृष्ण बलदेव वैद
अनुवाद : तेजी ग्रोवर

कहानी

कामरेड की हवेली 88
अशोक सक्सेना

रिश्तों की आक्सीजन 103
ज्ञानचन्द बागड़ी

संस्मरण

मेरा जिगरी दोस्त : नवलकिशोर 110
रणजीत

कविता

चन्द्रप्रकाश देवल 113
मिथिलेश श्रीवास्तव 117
राहुल राजेश 120
केशव शरण 124

शिवरानी के प्रेमचंद : कुछ चिन्हे कुछ अनचिन्हे

नीतू परिहार

प्रेमचंद का नाम हिंदी साहित्य में नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत में जाना-पहचाना है। भारतीय जीवन का जैसा सुंदर और सटीक चित्रण प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। प्रेमचंद की तत्कालीन प्रसिद्धि के बारे में बनारसीदास चतुर्वेदी का यह कथन भी उल्लेखनीय है- *प्रेमचंदजी के सिवा भारत की सीमा का उल्लंघन करने की क्षमता रखने वाला कोई दूसरा हिंदी कलाकार इस समय हिंदी जगत में विद्यमान नहीं है और आज भी जब उनकी रचनाएँ अंतर्राष्ट्रीय कीर्ति प्राप्त कर चुकी हैं, मुझे यही वाक्य दोहराना पड़ता है।*[1]

प्रेमचंद को उनके लिखे साहित्य के आधार पर तो सभी जानते हैं, किंतु वे अपने घर में अपने परिवार में कैसे रहते हैं और परिवार के प्रति उनका व्यवहार कैसा है यह सारी बातें उनके साथ रहने वाला ही ज्यादा अच्छी तरह से बता सकता है। प्रेमचंद की पत्नी द्वारा रचित पुस्तक *प्रेमचंद घर में* प्रेमचंद को बिल्कुल एक नए नजरिए से प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक संस्मरणात्मक विधा में लिखी गई है। सुमन राजे अपने *हिन्दी साहित्य आधा इतिहास* में लिखती हैं- *अपने प्रारंभिक रूपों में शिवरानी प्रेमचंद संस्मरणकार के रूप में हमारे सामने आती हैं और उल्लेखनीय बात यह है कि वे एक कथाकार पत्नी के द्वारा कथासम्राट पति के संबंध में लिखे गए हैं।*[2]

> *शिवरानी के पूछने पर कि क्या वे महात्मा गाँधी के तरफदार हो गए हैं, तो उनका जवाब था कि मैं तो उनका चेला ही हो गया हूं प्रेमचंद का मानना था कि चेला होने का मतलब यह कतई नहीं कि उनकी पूजा करने लगे, बल्कि उस व्यक्ति के गुणों को अपनाएँ*

शिवरानी देवी प्रेमचंद के साथ रही अपने जीवन के सुख-दुख उनके साथ साझा किए। उन्होंने प्रेमचंद के साथ बिताए अपने जीवन के अनमोल क्षणों को पुस्तक के रूप में लिखा पत्नी के लिए पति पहले पति है, फिर चाहे बड़ा लेखक हो या किसी बड़े पद पर हो। शिवरानी के लिए भी प्रेमचंद उनके पति ही है, लेखक बाद में हैं। शिवरानी की शादी बचपन में हो गई थी जब वे शादी का मतलब भी नहीं समझती थी। 11 वर्ष की उम्र की बच्ची क्या समझेगी कि शादी क्या होती है। इस पर यह कहर कि चार-पाँच माह में विधवा हो जाए, जिसका वह अर्थ नहीं समझती। विधवा का जीवन जीना भी कोई आसान नहीं है। शिवरानी को विधवा रूप में देखना उनके पिता के लिए बहुत कष्टपूर्ण था। वे अपने बच्ची को पूरी जिंदगी विधवा का जीवन नहीं जीना देना चाहते थे। वे उनका विवाह फिर से करना चाहते थे जिससे उनकी बेटी सामान्य जीवन जी सके उन्होंने अपनी बेटी के विवाह के लिए इश्तिहार निकलवाया। कई लड़के देखे, पर उन्हें कोई नहीं समझ आया। इस विज्ञापन को प्रेमचंद ने भी देखा और उन्होंने शिवरानी के पिताजी को खत लिखा और बताया कि वे यह विवाह करना चाहते हैं।

किसी विधवा स्त्री से विवाह आज भी सामान्य बात नहीं है तो उस जमाने में तो बिल्कुल भी नहीं थी फिर भी प्रेमचंद ने शिवरानी से विवाह किया। यह उनका सच्चे अर्थ में प्रगतिशील होना सिद्ध करता है। प्रेमचंद अपनी पत्नी से प्रेम भी बहुत करते थे। वे चाहते थे कि उनकी पत्नी पर्दा ना करें, घर में अपने अस्तित्व को पहचाने और प्रेमचंद के साथ सरकारी दौरों पर साथ चलें। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में भी स्त्री के अधिकारों की, स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व की बात कही है। शिवरानी ने अपने पति की कई ऐसी बातें बताई हैं जो उन्हें एक खुले विचारों का व्यक्ति सिद्ध करती है। वे बताती हैं- *बच्चे के बीमार हो जाने पर जब वे खाना नहीं बना पा रही थी तब खाना प्रेमचंद ने स्वयं बनाया। उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि वह पुरुष है और खाना बनाने का काम उनका नहीं है। बच्चे के सिर पर चोट लगी तीन दिन तक तो वह चारपाई पर सिर तक ना रख सका। इसलिए तीन-चार दिनों तक उन्हें ही रोटी पकानी पड़ी।*[3] *प्रेमचंद ने पत्नी बच्चों की हमेशा बीमारी में सेवा की शिवरानी कहती है सेवा उनका मूल मंत्र था। किसी को भी बीमार नहीं देख सकते थे।*[4]

पति-पत्नी में साथ-साथ रहते लगाव तो हो जाता है, पर प्रेमचंद को भी अपनी पत्नी से बेहद प्रेम था। यही कारण था कि वह घर के कामों में अपनी पत्नी का हाथ बटाते थे। घर का सामान लाना, बच्चों के लिए खिलौने लाना आदि कई काम वे सहर्ष करते। पत्नी के बीमार हो जाने पर खाना भी खुद बना लेते और बर्तन भी स्वयं धो लेते। एक बार पत्नी को अत्यधिक दस्त होने पर बहुत कमजोरी आ गई। करीब सुबह 4:00 बजे स्नानघर जाते हुए कमजोरी से गिर गई और बेहोश हो गई। प्रेमचंद दौड़े बेहोश पत्नी को उठाकर चारपाई पर लेटाया। होश आने पर आँखों में पानी भरकर बोले- *तुम्हारी जब ये हालत थी, तो मुझे क्यों न जगाया।*

मैं- आपको क्यों तकलीफ देती?

तो तुम मर जाने पर अपनी लाश ही दिखाना चाहती थी।

मैं-मरने का क्या अंदेशा था। कमजोर थी गिर पड़ी।

मरना कैसे होता है? बेहोश तो थीं ही तुम।[5]

प्रेमचंद को पत्नी के साथ ही घर से भी बहुत लगाव था। उनको घर, बच्चे और पत्नी के बिना अच्छा नहीं लगता। बच्चों को पढ़ाने के साथ-साथ खेलते भी। अमूमन यह देखा जाता है पत्नी के या बहू के बीमार हो जाने पर उसे पीहर भेज दिया जाता है। जो बहू दिन भर घर वालों की सेवा कर रही होती है, जो ससुराल वालों को ही अपना समझ रही होती है, बीमार होते ही वह पुनः पराई हो जाती है। ससुराल वाले यह मानते हैं कि जब बहू काम ही नहीं कर सकती तो यहाँ रखने का क्या औचित्य है अर्थात बहू है, तो उसे घर की सारी जिम्मेदारी निभानी है वरना उस घर में उसके लिए कोई स्थान नहीं है।

इस दृष्टि से प्रेमचंद की सोच बहुत प्रगतिशील है या उससे भी बहुत आगे है। एक बार शिवरानी जब बीमार हो गईं और लंबे समय तक बीमारी प्रेम की दीवानी के भाई को बहन की बीमारी का पता चला, तो उन्हें लेने आ गए ना चाहते हुए भी प्रेमचंद को भेजना पड़ा, प्रेमचंद अपने साले से पत्नी का ख्याल रखने का कहने लगे, तो पत्नी बोली *इससे आप बेफिक्र रहिए जब तक आपके पास थी तब तक आप की ड्यूटी थी, अब भाई की ड्यूटी है।*[6]

तभी प्रेमचंद ने कहा - *मेरी ड्यूटी हमेशा है। शरीफ भाई है, इसलिए उन पर ड्यूटी लगा रही हो।* प्रेमचंद को लगता है कि पत्नी का ध्यान उसका ख्याल रखने का दायित्व पति का ही होता है उस जमाने में ऐसी सोच रखने वाले विरले ही थे। प्रेमचंद जब भी कभी बाहर जाते उन्हें पत्नी की चिंता बनी रहती, लेकिन लोग उन्हें इतना पसंद करते थे जल्दी से जाने नहीं देते एक बार की बात है शिवरानी बतातीं हैं कि प्रेमचंद चार दिन का

कहकर सात दिन तक नहीं आए जिससे वह परेशान और चिंतित हो गई, यह सोच कर कि कहीं प्रेमचंद बीमार ना हो गए हों, परेशान होती रही। जब सात दिन बाद वे लौटे, तो बहुत नाराज हुई, तो प्रेमचंद ने उन्हें बहुत प्रेम स्नेह से समझाया कि कोई पंजाबी सज्जन बहुत आग्रह कर अपने घर ले गए। उनकी बीवी भी मुझसे मिलने के लिए व्यग्र थी। प्रेमचंद बोले *मैंने बहुत चाहा कि भाग कर निकलूँ, पर भागना मुश्किल हो गया मैं उनके यहाँ चलने को राजी हो गया, उस बेचारी को कैसे निराश करता, मैं उनके लिए रुक गया इसके बाद जो चाहो तुम सजा दे लो, अपराधी तुम्हारे सामने खड़ा है।*[7]

अपने आप को शिवरानी का अपराधी मानते हैं दोनों का एक-दूसरे के प्रति प्रेम और चिंता ही है जो एक स्वयं को अपराधी तो दूसरा क्रोध करता है शिवरानी को लगता भी है कि एक बड़े लेखक की पत्नी होने में कैसी आफत है- *लेखकों की बीवियों पर सबसे ज्यादा आफत आती है उनके घर के आदमी भी पूरे के पूरे उनके नहीं होते यही आफत हमेशा लगी रहती है।*[8]

शिवरानी आजादी के बाद के आंदोलनों में भी बहुत सक्रिय रहीं, वे जेल भी गईं। सन 1931 में सी क्लास आंदोलन की बात करते हुए वे बताती हैं कि जब वे जेल गईं, तो प्रेमचंद उनसे मिलने जेल में आते तो उनकी आँखें आँसुओं से भर आती। जितने दिन मैं जेल में रही प्रेमचंद ने ना तो भरपेट खाना खाया, ना ही खुलकर हँसे इस दौरान उनका वजन भी बहुत घट गया, प्रेमचंद शिवरानी से बहुत प्रेम करते थे, उनके जेल जाने पर घर में प्रेमचंद को बड़ा खालीपन लगता। जब शिवरानी जेल घर आईं तो उन्हें देखकर मुस्कुरा दिए- *मैंने उठ कर उनके पैर छुए, मुझे उठाकर सीने से लगाते हुए बोले- क्या तुम बीमार थी? गला तो मेरा भी भर आया था, मैं बोली- मैं तो काफी अच्छी हूँ आप बीमार थे क्या?*[9]

शिवरानी की अनुपस्थिति में प्रेम ठीक से कुछ लिख भी नहीं पाए। जेल में शिवरानी का वजन सात पौंड घटा जबकि प्रेमचंद का घर में चौदह पौंड घट गया। यह अंतर ही बताता है कि प्रेमचंद का पत्नी के प्रति लगाव और प्रेम कितना था। पत्नी ने जब पूछा- कैसे हुआ ये तो कहते हैं- *वैसा कैसे रह सकता था। तुम उधर जेल में थी, इधर में जेल का अनुभव कर रहा था।*[10]

भारतीय संस्कृति वार-त्यौहार की संस्कृति है। यहाँ बारह माह में तेरह त्यौहार आते हैं क्योंकि प्रेमचंद भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़े हैं। वे हर त्यौहार बड़े उत्साह से मनाते। उनके उत्साह के बारे में लिखतीं है कि घर में कई लोग उनको रंग लगाने आते हैं, भले ही बीमार हों या खाँसी हो पर कभी छुपते नहीं, बल्कि लोग आते रहते आराम से खड़े रहते, बड़े बेटे और दामाद बासुदेव प्रसाद के रंग खेलने पर बोले- *तुम लोगों के दिल में उत्साह होना चाहिए मुझे तो लड़कपन में जिस तरह का उत्साह था, आज भी ज्यों का त्यों वैसा ही है तुम लोग लड़कपन में ही उत्साह खो बैठे।*[11]

होली पर प्रेमचंद अपने गाँव जाना पसंद करते थे, तो पत्नी को कहते गाँव चलेंगे। गाँव में बड़ा अच्छा रहेगा गाँव पहुँच कर आप दरवाजे पर बैठकर भांडू का नाच होने के लिए इंतजार कर रहे थे। शाम को मैंने देखा गाँव भर की काश्तकार आदि सभी दरवाजे पर जमा हैं लोगों ने उठकर भांडू का नाच देखा। लोगों के लिए भांग वगैरह का भी प्रबंध किया गया था। ऐसा उत्साह छाया था कि क्या कहूँ।

प्रेमचंद अपने कामों में बहुत व्यस्त रहते थे, फिर भी घर को बच्चों को पूरा समय देते थे, एक बार *जागरण* और *हंस* पत्रिका निकालने में इतने व्यस्त हो गए कि दीपावली के त्यौहार को भूल गए। बाजारों की चहल-पहल देख उन्हें ध्यान आया कि आज तो धनतेरस है, घर पहुँच कर पत्नी को उलाहना देने लगे कि उन्हें क्यों याद नहीं दिलाया गया कि दीपावली आ रही है। गाँव के मकान की सफाई करवानी है अब सब 2 दिन में कई

मजदूर लगवा कर काम करना होगा, प्रेमचंद में त्यौहार मनाने के प्रति उत्साह के कारण ही एक ही दिन में मकान की सफाई रंग रोगन हो गया, यह भी उनकी विशेषता ही कही जाएगी कि दिनभर मजदूरों के साथ काम करते हुए भी शाम को गाँव वालों के साथ बैठकर उनकी भाषा में बातें करते। ग्रामीणों के साथ उनकी भाषा में बातें करना ही उन्हें एक अनुभव समृद्ध लेखक बनाता है। राजेन्द्र यादव के शब्दों में- *ग्रामीण क्षेत्र प्रेमचंद के अपने अनुभव संसार का हिस्सा है वे वहाँ अधिक आश्वस्त और सहज महसूस करते हैं, इसलिए अपने कथानक, पात्र और परिस्थितियाँ भी वहीं से चुनते हैं।*[12]

शिवरानी कहतीं हैं- *जब रोशनी कर चुके, तब दरवाजों पर बहुत से काश्तकार और लोग आकर बैठ गए, तब आप दीपावली त्यौहार मनाने का महत्त्व लोगों को समझाने लगे, इसके मनाने के कायदे क्या है, इस तरह की बहुत-सी बातें लोगों को उन्हीं की भाषा में बता रहे थे। क्या इस तरह का उत्साह को आप मामूली कहेंगे।*[13]

प्रेमचंद इस बात की भी चिंता निरंतर करते कि आज की पीढ़ी के बच्चों में त्यौहारों के प्रति उत्साह नहीं है। उन्हें क्यों होली-दिवाली मनाना अच्छा नहीं लगता। क्या लिखने पढ़ने से अपनी संस्कृति से दूर हो जाते हैं? वे कहते- *कुछ नहीं जी, आजकल के लौंडो में उत्साह नहीं है। त्यौहारों व खुशी के मौके पर खुश होना जीवन के लक्षण हैं, जिनमें जितना ही जीवन रहता है, वह उतना ही खुश रहता है।*[14]

प्रेमचंद पर गाँधीवादी प्रभाव तो था ही साथ ही वे स्वावलंबी थे। घर में नौकरानी होने पर भी खुद का काम खुद ही करते बच्चे भी आलसी ना हो जाए, इसलिए नौकर भी घर में कम रखते। शिवरानी देवी के कामों में हाथ भी बताते और उन पर कोई ना कोई जिम्मेदारी भी डालते रहते उनको यह विश्वास था कि उनकी पत्नी हर जिम्मेदारी को बड़ी बखूबी से पूरी कर लेगी। एक बार एक कहारिन पानी भरते हुए कुएँ में गिरते-गिरते बची उसने प्रेमचंद से कहा *आज तो मैं बच गई बाबूजी वरना कुएँ में गिर जाती।* यह सुन प्रेमचंद तुरंत भट्टे पर ईंटों का आर्डर देने चले गए। नाश्ता बना हुआ छोड़कर पहले उस कुएँ को ठीक से बनाना उन्हें अधिक जरूरी लगा, पत्नी के नाराज होने पर और यह कहने पर कि कुआँ तो पंचायती था। वे बोले- *सब को न दिखाई पड़े, तो मैं भी अंधा हो जाऊं? और कहीं आज तुम्हारी महरी कुएं में गिरी होती, तो सबसे पहले तुम ही रोती मैं तुमसे पूछता कि सब औरतें तो है ही, तुम ही क्यों रो रही हो।*[15]

उनकी चिंता दर्शाती है कि उन्हें अपनी या अपने घर की ही नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की चिंता है उसका ख्याल है और साथ ही वह अपना पैसा खर्च करने में भी पीछे नहीं हटते प्रेमचंद ने खूब लिखा मेरा यह मानना है खूब वही लिख सकता है जिसने पढ़ा भी बहुत खूब हो। प्रेमचंद अपने लेखन के प्रति बहुत इमानदार थे। सारी व्यवस्थाओं के बावजूद भी वे रात में लिखते दिन भर मिलने जुलने वालों के कारण न लिख पाते थे, तो सवेरे जल्दी 3-4 बजे उठकर लिखने लगते। कई बार शिवरानी तबीयत का हवाला देकर आराम करने को कहती थी उनका कहा मान एक बार सो भी जाते, लेकिन पत्नी के सोने पर फिर से उठकर लिखने बैठ जाते शिवरानी कहती है- *जिस दिन 10:00 बजे लौटते उस दिन रात को काम ना कर पाते, उस दिन 3:00 बजे रात को ही जाकर काम में लग जाते मगर इतना आहिस्ते से उठते कि मैं जाग ना पाती।*[16]

ऐसे पढ़ने लिखने वाले व्यक्ति का गाँधीजी से मिलने का मन होना स्वाभाविक है। वे गाँधी का लिखा हुआ, तो कहीं ना कहीं पढ़ लेते थे, प्रेमचंद ने सुन रखा था कि महात्माजी जैसे और सब बातों में निपुण है उसी तरह बात करने में भी बहुत कुशल हैं।[17]

महात्माजी से सैकड़ों लोग मिलना चाहते थे। उनके इर्द-गिर्द हमेशा भीड़ लगी रहती थी। सैकड़ों चिट्ठियाँ भी उनके पास आती। उन्हें भी वे देखते सन 1928 में प्रेमचंद जब हिंदुस्तानी एकेडमी की मीटिंग में प्रयाग गए तब महात्माजी वहीं थे, लेकिन उनसे भेंट नहीं हो पाई।

मीटिंग से दो दिन पहले और मीटिंग के दो दिन बाद तक रुकने पर भी मिलना नहीं हुआ। प्रेमचंद सिर्फ दर्शन के अभिलाषी नहीं थे, इसलिए भी नहीं मिल पाए, जब 1935 में *हिंदी परिषद* की मीटिंग वर्धा में हुई, तब प्रेमचंद *हंस* के विषय में बात करने वर्धा गए उस समय महात्माजी भी वर्धा में ही थे। वर्धा में हिंदी और हिंदुस्तानी के विषय में सलाह मशवरा करना था। *हंस* की बातचीत के साथ-साथ तब तक महात्माजी भी प्रेमचंद को जान गए थे, उनके लेखन से परिचित हो गए थे। उन्होंने प्रेमचंद को बुलाया और उनसे बातचीत की प्रेमचंद ने स्वयं कहा कि महात्माजी को जितना भी समझते थे वे उनसे अधिक मिले। शिवरानी के शब्दों में- *जितना मैं महात्मा जी को समझता था, उससे कहीं ज्यादा वह मुझे मिले महात्माजी से मिलने के बाद कोई ऐसा नहीं होगा जो बगैर उनका हुए लौट आए या तो वे सबके हैं या वह अपनी ओर सब को खींच लेते हैं। उनकी शक्ल सूरत और बातों में इतना खिंचाव है कि उन्हें जो भी देखता है उनकी तरफ खामखा खिंच जाता है, मैं कहता हूँ की बुरे से बुरा आदमी भी जो उनके समीप जाए, तो उनका ही होकर लौटेगा महात्मा गाँधी के समीप कोई कितना ही झूठा जाए, मगर उनके सामने उसे सच बोलना ही पड़ेगा।*[18]

शिवरानी के पूछने पर कि क्या वे महात्मा गाँधी के तरफदार हो गए हैं, तो उनका जवाब था कि *मैं तो उनका चेला ही हो गया हूं* प्रेमचंद का मानना था कि चेला होने का मतलब यह कतई नहीं कि उनकी पूजा करने लगे, बल्कि उस व्यक्ति के गुणों को अपनाएँ प्रेमचंद का 1922 में *प्रेमाश्रम* उपन्यास छपा था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम झाँकी और भगनागत राम राज्य की स्थापना का स्वप्न *प्रेमाश्रम* की विशेषता है सामने सिद्धांत इस उपन्यास का उद्देश्य है प्रेमचंद ने जो प्रेमाश्रम में लिखा महात्मा जी वैसा ही भारत में करना चाहते थे प्रेमचंद कहते हैं मैं महात्माजी का बना बनाया कुदरती चेला हूँ क्योंकि वे जो बात कराना चाहते हैं, उसे मैं पहले ही कर देता हूँ। वे दुनिया में महात्माजी को सबसे बड़ा मानते थे। सन् 1920 में गाँधीजी का भाषण सुनने सरकारी नौकरी छोड़ने का मन बना लिया था। सरकारी के प्रति उदासीनता तो पहले से ही थी गाँधीजी के प्रभावी भाषण सुनकर उनके मन को और पक्का कर दिया और कुछ समय बाद नौकरी छोड़ दी। बहुत-सी ऐसी बातें हैं जो शिवरानी ने प्रेमचंद के बारे में कही। दांपत्य जीवन के कई अनुभव शिवरानी ने *प्रेमचंद घर* में साझा किए हैं कुछ खट्टी कुछ मीठी यादें भी हैं उनकी जिन्हें वे बार-बार याद कर वे प्रेमचंद को महसूस करतीं हैं। कई बार वे यह भी सोचतीं हैं कि उन्होंने अपने पति को ध्यान से नहीं सुना या कि उनका ख्याल नहीं रखा, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं था। शिवरानी प्रेमचंद का खूब ख्याल रखती। प्रेमचंद को दाल में घी बहुत पसंद था। एक बार जब खाना खाने बैठे तो दाल में घी नहीं देखकर पूछा दाल में घी क्यों नहीं है, पत्नी ने कहा घर में हो, तब ना यह जानकर उन्हें बुरा लगा कि घर में घी नहीं है। कभी तरकारी, कभी दाल, कभी घी कुछ-कुछ चलता ही रहता है। नाराज हो वे बिना खाए उठ गए घर में सब ने खाया, पर प्रेमचंद ने नहीं। शिवरानी चिंता में परेशान रही कि आखिर वे क्या खाएँगे और उन्होंने आठ आने का घी मँगवा कर मूँग की दाल पीसकर हलवा और पकौड़ी बनाई- *मैंने कहा बड़ी मेहनत से अभी मैंने तैयार किया है और मैंने भी अभी तक कुछ नहीं खाया है।*[19] यह सुनकर प्रेमचंद को खाना खाना पड़ा और पत्नी को भी साथ ही खिलाया।

प्रेमचंद की विशेषता थी कि वे जिस विषय को दिल से चाहते थे जितने वे शिवरानी के थे, उतने ही साहित्य के भी थे। प्रेमचंद को हिंदी साहित्य में जो स्थान प्राप्त है उसका कारण उनका निरंतर साहित्य सेवा में रत होना है। साहित्य में वे कालजयी लेखक हैं। राजेन्द्र यादव का यह कथन उल्लेखनीय है उनके कालजयी और महान लेखक के रूप में- *वह आत्मा क्या है जो प्रेमचंद या किसी भी लेखक को महान, कालजयी और विशिष्ट बनाती है.... ? मेरी समझ में वे तत्त्व हैं - यातना और संघर्ष...सफरिंग और उससे निकलने की झटपटाहट, प्रयास, अपनी नियत के आगे असहाय होकर घुटना*

टूटना और मरना या उससे लड़ना, उससे समझने की कोशिश, बेचैनी, समझी या अनसमझी नियत के घेरे को लाँघ सकने की कोशिश।[20]

संदर्भ ग्रंथ

1. राजेन्द्र यादव, प्रेमचंद की विरासत, एक सपने की कथा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2006।
2. सुमन राजे, हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, छठा संस्करण, 2011 ।
3. शिवरानी देवी प्रेमचंद, प्रेमचंद घर में, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, संस्करण 2015।
4. शिवरानी देवी प्रेमचंद- प्रेमचंद घर में, भूमिका
5. सुमन राजे, हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, पृष्ठ 298
6. शिवरानी देवी प्रेमचंद, प्रेमचंद घर में, पृष्ठ 81–82
7. वहीं, पृष्ठ 87
8. शिवरानी देवी प्रेमचंद, प्रेमचंद घर में, पृष्ठ 77
9. वहीं, पृष्ठ 102
10. शिवरानी देवी प्रेमचंद, प्रेमचंद घर में, पृष्ठ 184
11. वहीं, पृष्ठ 184
12. वहीं, पृष्ठ 153
13. शिवरानी देवी प्रेमचंद, प्रेमचंद घर में, पृष्ठ 154
14. वहीं, पृष्ठ 130
15. राजेन्द्र यादव, प्रेमचंद की विरासत, पृष्ठ 9
16. शिवरानी देवी प्रेमचंद, प्रेमचंद घर में, पृष्ठ 177
17. वहीं, पृष्ठ 177
18. शिवरानी देवी प्रेमचंद, प्रेमचंद घर में, पृष्ठ 108
19. वहीं, पृष्ठ 82
20. वहीं, पृष्ठ 116
21. शिवरानी देवी प्रेमचंद, प्रेमचंद घर में, पृष्ठ 116
22. शिवरानी देवी प्रेमचंद, प्रेमचंद घर में, पृष्ठ 76
23 राजेन्द्र यादव, प्रेमचंद की विरासत, एक सपने की कथा यात्रा, पृष्ठ 19

सम्पर्क – डी–502, आर्चीपीस पार्क, बीएसएनएल रोड,
सेक्टर–4, उदयपुर–331001
मो. 94138-64055